बच्चों के व्यवहार पर चिन्तन

शिप्रा अग्रवाल

मैं 2012 से अज़ीम प्रेमजी स्कूल दिनेशपुर, उत्तराखण्ड में अध्यापिका के रूप में काम कर रही हूँ तथा कक्षा में नियमित रूप से व्यवहार को लेकर बातचीत करती हूँ। इस समय मैं कक्षा 4 की कक्षा अध्यापिका हूँ। कक्षा में पाँच बच्चे ऐसे हैं जो कि शिक्षिका की अनुपस्थिति में दूसरे बच्चों को अपशब्द बोलते हैं, गाली देते हैं तथा नाम बिगाड़ते हैं। इस कारण मारपीट की नौबत भी आ जाती है। इससे कक्षा का संचालन एवं शिक्षण कार्य बाधित होता है। कभी-कभी तो कक्षा का काफ़ी समय उनके झगड़े सुलझाने में व्यतीत हो जाता है।

केस स्टडी

मेरी कक्षा में पाँच बच्चे ऐसे थे जो किसी-न-किसी कारण झगड़ा करते या फिर गाली बोलते। इन बच्चों के व्यवहार एवं बोलचाल में अधिक मात्रा में अपशब्द प्रयुक्त होते थे। मैंने इन बच्चों के साथ काम करने का सोचा। वैसे तो कहते हैं -

- शारीरिक दण्ड सबसे आसान तरीक़ा होता है जिससे बच्चों को काबू में किया जा सकता था। लेकिन बच्चों को शारीरिक दण्ड देने से उनकी पढ़ाई पर असर पड़ता। उनका ध्यान अपनी तकलीफ पर जाता व मुझसे भयभीत होने की सम्भावना का एहसास भी था।
- एक विचार आया कि इन बच्चों को कक्षा के बाहर कर दूँ। पर इससे उनकी पढ़ाई प्रभावित होती और यह सम्भावना अधिक थी कि उन्हें बाहर रहने में मज़ा आने लगता व समस्या कम होने के बजाए बढ़ सकती थी।
- उनके अभिभावकों को बुलाकर उनसे बातचीत की जाए। इससे स्कूल में बच्चों की नियमित उपस्थिति बनी रहेगी। या उनके मन में स्कूल के प्रति बगैर डर के उपस्थिति होगी। अन्त में मैंने उन बच्चों से कक्षा के बाद अलग से बातचीत करने का विचार मन में बनाया।

कार्य योजना : मैंने इस समस्या को कम करने के लिए कक्षा के बाद अलग से, नियमित रूप से इन पाँचों बच्चों के साथ बात करने की योजना बनाई। ऐसा मैंने ये सोचकर किया जिससे बाक़ी तरीक़ों में उन बच्चों की पढ़ाई प्रभावित न हो।

प्रक्रिया : मैंने इन पाँच बच्चों के साथ सामान्य बात करनी शुरू की। मैंने बच्चों से पूछा कि आप स्कूल में क्या-क्या करते हो? सभी बच्चों के उत्तर अलग-अलग थे।

एक बच्चे ने कहा, "पढ़ाई करते हैं।"

एक बच्चे ने कहा, "खेलते हैं।"

एक ने कहा, "खाना भी खाते हैं।"

फिर मैंने पूछा, "आपको स्कूल में क्या करना सबसे अच्छा लगता है?"

सभी ने एक साथ कहा, "खेलना अच्छा लगता है।"

फिर मैंने पूछा, "क्या कोई आपको अपशब्द भी बोलता है?" मेरा यह पूछना था कि सभी ने एक साथ अपने-अपने अनुभव शेयर करने शुरू कर दिए।

एक ने कहा कि प्रिया हमें गाली देती है।

दूसरे ने कहा कि कई बच्चे मेरा नाम बिगाड़कर बोलते हैं।

तो मैंने पूछा, "तुम भी उनको जवाब देते होगे?" तो सभी ने "हाँ" कहकर जवाब दिया।

मैंने कहा कि उस समय जवाब देने की बजाए चुप रह सकते हो? तो सभी ने कहा, "हाँ, रह सकते हैं।"

मैंने कहा, "हम स्कूल में पढ़ाई के साथ-साथ अच्छी बातें तथा अच्छा व्यवहार सीखने भी आते हैं। यदि हम दूसरों द्वारा बोले गए अपशब्द का जवाब न दें तो क्या लड़ाई कम हो सकती है?" तो सभी ने कहा "हाँ।" मैंने कहा, "यदि आप सहमत न हो तो बगैर संकोच के बात कर सकते हैं क्योंकि अपने बारे में अपशब्द सुनना किसी को भी अच्छा नहीं लगेगा और उस समय चुप रहना बहुत मुश्किल है। क्या तुम सब यह कर पाओगे?" तो सभी ने कहा, "हाँ, कर पाएँगे।" मैंने कहा, "ठीक है, कल बात करेंगे कि कितने बच्चे दूसरों द्वारा कही गई ग़लत बातों व अपशब्दों का जवाब नहीं देंगे।"

अगले दिन बच्चों ने अपने-अपने अनुभव शेयर किए। किसी ने कहा कि उसने मुझे ऐसा कहा पर मैं चुप रहा और घर चला आया। एक ने कहा कि जब मैं घर के बाहर खेलने के लिए गई तो उसने मुझे गाली दी पर मैं चुप रही। इसके बाद मैंने कहा, "क्या तुम में से भी कोई किसी को अपशब्द बोलता है?" तो सब एक-दूसरे का नाम लेने लगे कि यह गाली देता है, यह अपशब्द बोलता है। मैंने कहा, "केवल अपने बारे में बात करें, दूसरे के बारे में न बताएँ।" फिर सबने कहा कि कभी-कभी बोलते हैं। मैंने कहा कि आगे से क्या आप ध्यान रख सकते

हैं कि अपशब्द न बोलें? सबने अपनी सहमति प्रदर्शित की व कहा कि हम ध्यान रखेंगे तथा अपशब्द नहीं बोलेंगे।

आज दिनांक 5 नवम्बर 2016 को दीपावली की छुट्टियों के बाद बच्चे स्कूल आए थे। उस दिन इन पाँच बच्चों में से तीन उपस्थित थे। मैंने कक्षा से अलग इन तीन बच्चों से बात की। मैंने बच्चों से पूछा, "छुट्टियाँ कैसे बिताईं?" इस बात से शुरुआत की जिससे बच्चे बात करने में सहज हो सकें। सबने अपने-अपने अनुभव शेयर किए। फिर मुद्दे को लेकर बात की। सबने सहमति जाहिर की कि हम न तो अपशब्द बोलते हैं और यदि कोई बोलता है तो उसको जवाब नहीं देते। "लेकिन कक्षा में बोलते समय क्या अपनी बारी का इन्तजार करते हो?" उस पर जवाब था – "ऐसा नहीं कर पाते, कोशिश करते हैं पर भूल जाते हैं।" मैंने कहा, "ठीक है, जैसे और बातों का ध्यान रहता है इसका भी ध्यान रहेगा और फिर आदत हो जाएगी।"

सबने कहा कि हम कोशिश करेंगे। अभी भी उनके इस व्यवहार में कोई अन्तर नहीं दिख रहा था। मेरे साथ तो सहजता से बात करते थे परन्तु और जगह से अभी भी व्यवहार सन्तोषजनक नहीं दिख रहा था। मैं समुदाय भ्रमण में राजकुमार (काल्पनिक नाम) के घर गई। जिस टोन में मैंने उसको बात करते देखा मुझे अच्छा नहीं लगा। मैंने इन बच्चों से बात करते हुए भाषा की टोन के बारे में बात की, जिस पर सबकी सहमति थी कि हमें अपने से बड़ों-छोटों व सहपाठियों के साथ किस टोन में बोलना चाहिए। व्यवहार में परिवर्तन आसान नहीं है। उसके लिए लगातार बात व ऐसे वातावरण की आवश्यकता है। वातावरण देना तो हमारे हाथ में नहीं है। उसका प्रभाव उसके समुदाय, सहपाठियों-मित्रों का होगा। पर, बातचीत से जितना सम्भव हो पाए, मैं कोशिश करती हूँ।

उसके बाद मैं रिपोर्ट-कार्ड लिखने में व्यस्त होने के कारण कई दिन बात नहीं कर पाई। इस कारण उनका व्यवहार फिर पहले जैसा नजर आने लगा। मैंने सोचा, बात करना छोड़ने से पहले की गई बात भी बेकार हो जाएगी। जैसे भी समय मिले बात करनी चाहिए। चाहे वह समय लंच ब्रेक में मिले या किसी और समय। बात करना नहीं छोड़ना चाहिए।

15 दिसम्बर 2016 को मैंने कमल, राजकुमार, विकास, कविता व प्रेमा (काल्पनिक नाम) को बुलाया। मेरा काफ़ी समय उन बच्चों की बातें सुनने में चला गया जो वे मुझसे करना चाहते थे। सही भी हुआ कम-से-कम वे बच्चे अपनी बात कर पाए। पर बातों में अधिकतर दूसरे बच्चों की शिकायतें ही थीं। धीरे-धीरे पता चला कि उन शिकायतों का उन्होंने पहले ही रेस्पोंस दे रखा था। जैसे इसने मुझे ऐसा कहा इसलिए मैंने उसका जवाब दिया। उसने वैसा कहा तथा मैंने ऐसा जवाब दिया इत्यादि। मैंने केवल एक बात बोली, "जवाब देने की अपेक्षा जब कोई ऐसा कहता है तो उसे दिनांक व समय डालकर लिख लो। जब भी बात करते हैं तो केवल अपने बारे में बात करें कि तुम दूसरों के साथ कैसा व्यवहार कर सके।" बच्चों के साथ बात करने से बच्चों के व्यवहार में अन्तर तो दिखाई दे रहा है परन्तु व्यवहार में यह बदलाव जब तक बात की जाती, तब तक ही दिखाई देता है। बातचीत बन्द करने से फिर पहले जैसा ही व्यवहार दिखाई देने लगता है।

18 जनवरी, 2017 को शिक्षक साथियों के साथ मीटिंग के दौरान जब बच्चों से व्यवहार पर बातचीत की शेयरिंग हुई तो मुझे पता चला कि राजकुमार (काल्पनिक नाम), जो कि पहले अँग्रेज़ी का एक शब्द पढ़ने से कतराता था, आज खुद अँग्रेज़ी की कहानी की किताब पढ़ने के लिए माँगता है। पता नहीं उसमें यह बदलाव कैसे आया, लेकिन यह बदलाव आया है। दूसरे शिक्षक ने कविता (काल्पनिक नाम) के बारे में बताया गया कि वह खेल खेलने के लिए पहले तैयार ही नहीं होती थी लेकिन अब खुद आकर लीडरशिप लेना चाहती है। खेल दिवस के दौरान भी देखा गया कि उसने फुटबॉल मैच में कप्तान की भूमिका में कार्य किया व अपनी टीम को विजयी बनाया। बात करने के अन्दाज़ में भी बदलाव नज़र आता है।

23 जनवरी, 2017 को कई दिन बाद मैं बच्चों से मिल पाई। पहले सर्दियों का अवकाश चल रहा था। फिर डीएम द्वारा घोषित अवकाश। उसके बाद दो दिन मैं निजी कार्य से छुट्टी पर थी। इसलिए मैंने आज बच्चों से बात करने की योजना बनाई। लेकिन स्कूल में पूरे पीरियड्स पढ़ाने व लंच समय में ड्यूटी होने के कारण मैं बात नहीं कर सकी। मैंने अपनी परेशानी स्कूल प्रधानाचार्य जी के समक्ष रखी। उनका कहना था कि लंच उन बच्चों के साथ किया जा सकता है। मुझे भी सुझाव सही लगा। नहीं तो बात करना छूट जाएगा। इससे बेहतर है थोड़ी देर के लिए ही सही पर बच्चे अपनी बात कर पाएँ। अगले दिन मैंने लंच के समय बच्चों से बात की। लंच करने के बाद जब इस बारे में प्रधानाचार्य जी से बात हुई तो उनका सुझाव था कि औपचारिक बात की अपेक्षा अनौपचारिक बात ज़्यादा बेहतर होगी क्योंकि उसमें बच्चे बिना किसी झिझक के बात कर सकते हैं। उसमें शिक्षक व विद्यार्थी की हेरारकी नहीं रहती। लेकिन मेरा अनुभव कुछ अलग ही था। मुझे अलग बैठकर बात करना ज़्यादा बेहतर लग रहा था। शायद क्योंकि उसमें मैं अधिक सहज थी। लेकिन बच्चे किसमें ज़्यादा सहज होंगे ये बच्चे ही बेहतर बता पाएँगे।

अगले दिन मैंने बातचीत में बच्चों से यही जानने का प्रयास किया। लेकिन इस दिन इनमें से तीन बच्चे ही उपस्थित थे जिसमें तीनों के अलग-अलग मत थे। एक बोला, "लंच के समय।" दूसरे ने कहा, "यहाँ डिस्टर्ब होता है, पहले जहाँ बात

करते थे वहीं पर चलते हैं।" तीसरे ने कहा, "कहीं भी बैठ सकते हैं।"

मुझे अलग बैठकर बात करना इसलिए ज़्यादा बेहतर लगा क्योंकि उसमें डिस्टर्बेंस नहीं था। बाहर बच्चे कभी आसमान में हेलीकॉप्टर के बारे में, कभी दूसरी कक्षा के खेल देखने में व्यस्त हो जाते। फिर उनका ध्यान अपनी ओर लाना होता। इसी तरह खाना खाने के बाद बाहर फील्ड में बैठकर बात करने में भी डिस्टर्बेंस हुआ। बात के दौरान कभी एक क्लास के बच्चे तो कभी दूसरी क्लास के बच्चे अपनी-अपनी शिकायतें लेकर आने लगे। इस दौरान कुछ ही बात हो पाई। बात का लिंक टूट जाने पर व्यवहार पहले जैसा दिखने लगता है। कक्षा में ढंग से न बैठना, दूसरे बच्चों को मारना, कक्षा में बीच-बीच में टॉपिक से अलग बात बोलना। इन बातों को ध्यान में लाया। इसके अतिरिक्त बच्चों ने अपनी बातें शेयर कीं कि आज हमने आपको स्कूटी चलाते हुए देखा। तुषार बोला, "मैं भी स्कूटी चलाना जानता हूँ।" सौरभ ने कहा, "मुझे भी स्कूटी चलाना आता है।" रश्मि बोली, "अगले साल तक मुझे भी आ जाएगी।" तब तक लंच ब्रेक का समय समाप्त हो गया। अगले दिन लंच ब्रेक में लंच करने के बाद फील्ड से अलग एक कमरे में बैठे। थोड़ी बात के उपरान्त मैंने बच्चों से जानना चाहा कि उन्हें कहाँ बैठकर बात करना अच्छा लगता है? तो सभी ने कहा, "फील्ड से अलग बैठकर क्योंकि यहाँ दूसरे बच्चे डिस्टर्ब नहीं करते।" आज पाँच में से चार बच्चे उपस्थित थे जिनमें से दो बच्चों से एक जगह बैठा नहीं जा रहा था। एक तो मुझे लगता है कि इस कमरे में चेयर्स ज़्यादा आरामदेय थीं। कक्षा में वुडेन चेयर्स हैं या उनमें एकाग्रता की कमी के कारण भी एक जगह थोड़ी देर तक बैठने में परेशानी होती है। कक्षा में भी उन्हें एक जगह बैठने के लिए बार-बार आग्रह करना पड़ता है। मैंने इस ओर उनका ध्यान आकर्षित किया व इसमें सुधार करने के लिए प्रोत्साहित किया।

4 फरवरी, 2017 को मैंने इन बच्चों से बात की। बच्चे अलग से बात करने में सहज होकर बात कर पाते हैं। ये स्वयं बच्चों ने बताया कि सबके सामने बोलने में शर्म आती है। सही भी है एक वयस्क होने के नाते भी जितना कम्फर्ट हम अनौपचारिक चर्चा में रहते हैं उतना औपचारिक में नहीं। जैसा कि पिछली चर्चा में आया था कि जब बड़े समूह में बात हो रही हो तो एक जगह बैठकर बात सुननी चाहिए, उसमें सुधार नहीं है। सौरभ ने कहा, "मैडम ध्यान नहीं रहता।" और मुझे भी लगता है कि आदत में बदलाव एक बार बोल देने से नहीं होगा। बार-बार उस ओर ध्यान दिलाना पड़ेगा। तुषार ने बोला कि असेंबली के समय कक्षा पाँच का नारायण मेरा नाम बिगाड़ रहा था। मैंने उसका जवाब नहीं दिया। मैंने कहा, "तुमने ठीक किया। उसके कक्षा अध्यापक को बताना चाहिए। वह उससे बात करेंगे। इससे पहले कक्षा चार की कृष्णा के साथ तुम्हारी लड़ाई इसलिए बढ़ी कि तुमने उसका जवाब दिया व दोनों ने एक-दूसरे को मारा और उसके पैर में चोट लगी। ऐसा नहीं होना चाहिए।" इसी प्रकार थोड़ी देर बात के बाद हम अपनी-अपनी कक्षाओं में चले गए।

निष्कर्ष : इस प्रकार सत्र की समाप्ति तक मैंने इन बच्चों के व्यवहार को लेकर काम किया व कई बार व्यवहार में बदलाव देखने को मिला। इन बच्चों के व्यवहार में कुछ तो परिवर्तन दिखता है। लेकिन आगे भी अभी और काम करने की आवश्यकता है।

शिप्रा अग्रवाल अज़ीम प्रेमजी स्कूल, दिनेशपुर, उत्तराखण्ड में शिक्षिका हैं। वे 1997 से शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं। उनसे shipra.agarwal@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।